TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY

OU_178170

UNIVERSAL LIBRARY

ऑनरेरी मजिस्ट्रेट

(प्रहसन)

लेखक

श्रीयुत सुदर्शन

प्रकाशक

सरस्वती प्रेस, बनारस

पी बार] १६४५ [मूल्य ॥)

COPY RIGHT 1945
All rights Reserved
by
SHRIYUT SUDARSHAN.

Printed and published by Sripat Rai, at the
Saraswati Press, Benares.

दो शब्द

यह छोटी-सी पुस्तक हिन्दी-भाषा-भाषियों के सम्मुख रखते हुए मुझे कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। पुस्तक स्वयं बतायेगी। मुझे केवल यह कहना है कि यह प्रहसन है। हिन्दी में प्रहसनों का बड़ा अभाव है। जो आठ-दस प्रहसन हैं, वे या तो फ़रांसीसी भाषा से अनूदित हैं, या बँगला से। हिन्दी में मौलिक प्रहसन बहुत ही थोड़े हैं। ऑनरेरी मजिस्ट्रेट इसी अभाव की पूर्ति के लिए लिखा गया है।

वर्तमान-युग के नाट्यकारों ने अपना सिद्धान्त बना लिया है कि नाटकों में कविता बहुत रखते हैं। शायद इससे रंग-मंच की शोभा बढ़ जाती हो और तालियों के शोर से आकाश गूँज उठता हो। परन्तु नाटक स्वाभाविक नहीं रहता। मैंने आज तक नहीं देखा कि दो मित्र लड़ें और उनकी लड़ाई कविता में हो। या पति-पत्नी प्यार-मुहब्बत की बातें करें और शेर-बाज़ी पर उतर आयें। हमारा रंग-मंच ऐसी बातों के लिए बदनाम है। सभ्य-समाज अव्वल तो भारतीय नाटक देखता ही नहीं और अगर देखता है, तो हँसता है। ऑनरेरी मजिस्ट्रेट को मैंने ऐसी बे-हूदगियों से बचाने का प्रयत्न किया है।

इस नाटक के प्रधान पात्र ख़ास लाहौर (पंजाब) के रहनेवाले हैं, इसलिए प्रायः र को ड़ और श को स बोलते हैं। आप ख़ास लाहौर के किसी भी अपढ़ आदमी से बातचीत करें, वह लाहौर को लाहौड़, महाराज को महाड़ाज, और मेहरबानी को मेहड़बानगी कहेंगे और इतना ही नहीं, वह फ़रङ्गी को फड़ङ्गी, मजाल को मज़ाल, चपरासी को चड़फांसी, मंजूर को मंजूर, तक़सीर को अकसीर, मालूम को मालम, इलज़ाम को इलतजाम, जुरमाना को जरीमाना, दोष को दोस कहते हैं, और इसी तरह और भी कई अशुद्ध शब्दों का प्रयोग करते हैं। मैंने उनकी भाषा को वैसा ही रखा है, इससे नाटक में जान-सी पड़ गई है।

अन्त में मुझे यह स्पष्टया लिखना है कि इस पुस्तक के तैयार करने का अभिप्राय किसी का अपमान करना नहीं, बल्कि सभ्य-समाज के सामने हास्य-विनोद की सामग्री रखना है।

इस नाटक के सभी पात्र कल्पित हैं।

राम-कुटिया,
लाहौर
२६-११-२६

सुदर्शन

पात्र-परिचय

गंडूशाह झंडूशाह	...	...	लाहौर के दो अपढ़ अमीर
हरिया	...	...	गंडूशाह का नौकर
मालिन	...	...	गंडूशाह की दासी
शामो	...	...	गंडूशाह की स्त्री
रामदेवी	...	...	झंडूशाह की स्त्री
शंकरदास	...	...	गंडूशाह का एक पड़ोसी
हरो	...	...	एक पड़ोसिन
हसनदीन	...	...	सब-जज
गोपालदास	...	...	रीडर
लालदीन	...	...	कचहरी का चपरासी
रामदास	...	...	झंडूशाह और गंडूशाह का एक मित्र

स्थान

लाहौर का एक मुहल्ला और कचहरी।

समय

आज से पचास साल पहले

ऑनरेरी मजिस्ट्रेट

पहला दृश्य

स्थान—लाहौर में गंडूशाह के घर का आँगन

समय—प्रातः आठ बजे

[गंडूशाह चारपाई पर बैठे हिसाब-किताब करते जाते हैं और हुक्का पीते जाते हैं। सामने उनकी स्त्री शामो चटाई पर लेटी है और मालिन उसके सिर से सफ़ेद बाल चुन चुनकर निकाल रही है। थोड़ी दूर पर बैठा हरिया गन्ना चूस रहा है।]

(बाहर से आवाज़)

गंडूशाह ! ए गंडूशाह जी।

गंडूशाह—

(सिर उठाकर) अरी मालिन !

मालिन—

(बाल निकालना बंद करके) हाँ शाह जी !

गंडूशाह—

(हुक्के का दम लगाकर) ज़रा देखो तो, बाहर कौन बुला रहा है ! (फिर हिसाब में लग जाते हैं।)

मालिन—

कोई जाट होगा। रुपया लेने आया होगा। उसकी लड़की का ब्याह होगा। जा हरिया ! देख। (फिर बाल चुनने लगती है।

हरिया—

(गन्ना चूसते चूसते) तेरी टाँगें टूटी हुई हैं ? लालाजी ने तुझे कहा है, तो तू काम कर। यह क्या किया मुझ पर हुकम चढ़ा दिया। (फिर गन्ना चूसने लगता है।)

(आवाज़)

लालाजी ! ए लालाजी !

गंडूशाह—

मालिन ! अरी देखना कौन है ? (ऊँची आवाज़ से) आया। (फिर हिसाब में लग जाते हैं।)

मालिन—

देखो तो, बैठा-बैठा गन्ना चूस रहा है। इतना नहीं होता कि उठकर दरवज्जे तक हो आये। (जाती है।)

हरिया—

हुकम चढ़ा देती है, हुकम चढ़ा देती है। बड़ी आई है महारानी कहीं कीं।

शामो—

और तू कौन-से मोती पड़ो रहा है ? उठकर चला जाता, तो क्या गजब हो जाता ? वह तो फिड़ भी कुछ कड़ ही रही थी।

हरिया—

दिन-रात काम करते करते मेरी कमर टूट जाती है। फिर भी आप नराज ही रहती हैं।

शामो—

बड़ा काम करता है तू। बता तो, आज पड़भात से तूने क्या-क्या किया है ? बोल।

हरिया—

भाजी लाया, पानी भरा, दरजी के पास गया, लालाजी के लिए तमाखू लाया। अब कुछ कमर सीधी कर रहा हूँ।

शामो—

यही बड़ा काम है ?

(मालिन घबराई हुई आती है।)

शामो—

कौन है, मालिन, कौन है ?

मालिन—

चड़फाँसी है मांजी ! (हाँफती।)

शामो—

(घबराहट से उछलकर) क्या कहा चड़फाँसी है ?

गंडूशाह—

(बही छोड़कर) क्या है ? मालिन ! तुझे क्या हुआ ? (हुक्का पीते हैं ।)

मालिन—

बाहर चड़फाँसी खड़ा है ! चड़फाँसी

(गंडूशाह घबराकर खड़े हो जाते हैं, हुक्का उलट जाता है ।

गंडूशाह—

चड़फाँसी है !

मालिन—

हाँ लालाजी ! चड़फाँसी है ।

गंडूशाह—

हमने कोई चोड़ी की है, डाका माड़ा है, किसी की हत्या कड़ी है ? हमारे घड़ चड़फाँसी क्यों आया है ?

शामो—

(रोते हुए) ड़ाम जाने, अब क्या हो जायगा । मेरी आँख फड़क रही थी । पता नहीं, चड़फाँसी क्यो आया है ? सीतला माई, तेरा ही आसड़ा है दुड़गा माई तेरा ही सहाड़ा है ।

गंडूशाह—

पर यह चड़फाँसी आया क्यो है, है ?

हरिया—

(गन्ना चूसकर) चड़फाँसी नहीं होगा ।

गंडूशाह—

अच्छा, तेरा क्या ख्याल है ?

हरिया—

यह चड़फाँसी नहीं होगा ।

शामो—

तेरे मुँह में घी-सक्कड़ । उठकर जड़ा देख तो सही, कौन है ?

गंडूशाह—

जा भई, देख। मेरा तो हिरदा धड़क रहा है। (शामो से) जड़ा देख, धक-धक कर रहा है न? (ठंडी साँस लेता है।)

हरिया—

(चुटकी बजाकर) मैं अभी आया। (दुपट्टा सँभालता हुआ जाता है।)

गंडूशाह—

मालिन!

मालिन—

हाँ शाहजी!

गंडूशाह—

चड़फाँसी था? सचमुच चड़फाँसी था?

मालिन—

हाँ लालाजी! चड़फाँसी ही था। कोई मैं इतनी अनजान तो नहीं हूँ।

गंडूशाह—

अच्छी तड़े से देखा था?

मालिन—

अच्छी तड़े से। मैं तो पसीना-पसीना हो गई थी।

गंडूशाह—

हे महाबीड़! अब तो तेरी ही आसा है।

शामो—

(ठंडी साँस लेकर) सीतला माई! तू ही रच्छा कर। हमारे घड़ में तो आज तक चड़फाँसी नहीं आया।

(हरिया दौड़ता हुआ आता है।)

गंडूशाह—

हड़िया! कौन है?

हरिया—

(हाँफ-हाँफकर) लालाजी! वही है। बस वही है।

गंडूशाह—

वही कौन?

हरिया—

वही चड़फाँसी है। और कौन ?

मालिन—

मैंने झूठ थोड़ा ही कहा था।

गडूशाह—

(कपार पर हाथ मारकर) पता नहीं, हमारी तकदीड़ में क्या लिखा है, जो चड़फाँसी आया है। (हरिया से) तूने पूछा नहीं कि क्या बात है ?

हरिया—

पूछता कौन ? मेरे तो प्राण ही निकल गये थे। मैं भागकर यहाँ पहुँचा हूँ। कहीं पकड़कर क़ैद कर लेता, तो फिर मैं क्या कर लेता ?

गडूशाह—

तो अब क्या होगा ?

आवाज़—

लालाजी ! ए लालाजी महाराज !

शामो

लो, वह फिर बुला रहा है।

मालिन—

वही चड़फाँसी है।

गडूशाह

तो क्या किया जाय अब ? मुझे तो डर लगता है।

शामो —

(हरिया से) जा, जाकर कह दे, लालाजी घड़ पर नहीं हैं

गडूशाह

कह दे, कह दे ! यही ठीक है। जा दौड़ के जा।

मालिन

पता नहीं, किसी ने क्या इलतजाम लगा दिया है।

शामो

किसी दुसमन का काम है—किसी दुसमन का।

हरिया—

मेरा भी यही ख्याल है।

गड्डूशाह—

तू जाकर कह दे, लालाजी घड़ पर नहीं हैं। जा तो। खड़े-खड़े मुँह क्या ताकता है?

शामो—

सुनता नहीं, जाकर कह दे, लालाजी घड़ में नहीं हैं।

(चपरासी का सहसा प्रवेश)

गंडूशाह—

चड़फाँसी! जी आ गये।

(शामो, मालिन और हरिया, सबका भागना)

चपरासी—

लाला गंडूशाहजी आपही हैं?

गडूशाह—

फड़ड्गी साहब के चड़फाँसीजी! बन्दगी।

चपरासी—

बन्दगी, महाराज! बन्दगी।

गंडूशाह—

(धोती की खूँट से एक रुपया निकालकर) चड़फाँसी जी!

चपरासी—

महाराज!

गंडूशाह—

(रुपया देकर) यह आपके सरबत-पानी के लिए है।

चपरासी—

आपकी किरपा चाहिए। (रुपया ले लेता है।)

गंडूशाह—

चड़फाँसीजी!

चपरासी—

जी साहब।

गड्डूशाह—

क्या हुकुम है ? हमने क्या कुसूर किया है ?

चपरासी—

आपको डिप्टी कमिश्नर ने बुलाया है ।

गड्डूशाह—

(घबराकर) फरङ्गी साहब ने ?

चपरासी—

हाँ लालाजी फरङ्गी साहब ने ।

गड्डूशाह—

पर मैने कोई अकसीर नहीं की । फिर मुझे क्यो बुलाया है ? (ठण्डी साँस लेकर) चड़फाँसीजी !

चपरासी —

हाँ शाहजी !

गड्डूशाह —

तुम यह नहीं कह सकते कि वह यहाँ नहीं हैं ? समझे । मै आपका हक़ दे दूँगा ।

चपरासी—

और जो किसी को पता लग गया, तो फिर क्या होगा ?

गड्डूशाह—

अच्छा ! मै गङ्गाजी स्नान करने चला जाता हूँ ।

चपरासी -

तो वह फिर दुबारा न भेज देंगे मुझे ?

गड्डूशाह—

तो एक और काम करो । जाकर कह दो, गड्डूशाह मर गया है ।

चपरासी—

और अगर कोई चुगली कर दे, तो मुझे जरीमाना हो जायगा । शायद मेरी नौकरी ही छूट जाए ।

गंडूशाह—

चड़फाँसी जी। मैं अभी स्यापा सुरू करवा देता हूँ। सारे सहर में सोर मच जायगा कि गंडूशाह मड़ गया है। फड़ङ्गी साव को भी मालूम हो जायेगा, कि गंडूशाह मड़ गया है।

चपरासी —

(सोचकर) नहीं महाराज, यह भी मुसकिल है। आप ज़रा हो आयें। कोई खौफ़ की बात नहीं। आप तसल्ली रखें।

गंडूशाह—

फड़ङ्गीशाह के चड़फाँसीजी! मुझे बचा लो। मैं आपको एक और रुपया देता हूँ। तुम जाकर इतना कह दो कि गंडूशाह मड़ गया है। (रुपया निकालकर दिखाता है।)

चपरासी—

शाहजी! (लालायित दृष्टि से रुपये की तरफ़ देखते हुए) यह मुसकिल है।

गंडूशाह—

मगड़ मैंने अपराध क्या किया है? (रुपया फिर धोती में बाँध लेता है।)

चपरासी—

गंडूशाह आपही हैं न?

गंडूशाह—

नहीं चड़फाँसीजी! मैं तो गंडूमल हूँ।

चपरासी—

और आपही बड़े अमीर हैं ना?

गंडूशाह—

कौन कहता है हम बड़े अमीर है? हम तो फकत एक बखत रोटी खाते हैं, चड़फाँसीजी! बेसक किसी से पूछ लें। हम तो बड़े गड़ीब लाहौड़िए हैं।

चपरासी—

नहीं महाराज आप ही गंडूशाह हैं।

गंडूशाह—

चड़फाँसीजी ! हस मुहल्ले में अमीड़ तो एक झंडूशाह हैं। कहीं आप गलती तो नहीं कर रहे हैं। फड़ङ्गी साव ने झंडूशाह को बुलाया होगा। क्यों ?

चपरासी—

हाँ झंडूशाह को भी बुलाया है साहब ने। मगर आपको भी बुलाया है।

गंडूशाह—

बुलाया है, तो झंडूशाह को भी (कुछ धीरज धरकर) तो कोई हड़ज नहीं। वह नुक्कड़वाला घड़ है। चलकर आवाज दो।

चपरासी—

तो आप भी तैयार हो जायँ। मै उनको बुलाता हूँ।

गंडूशाह –

बहुत अच्छा चड़फाँसीजी, बहुत अच्छा। आप चलें मगड़ यह ख्याल रखना कि मैं बड़ा गरीब आदमी हूँ। हम कभी रात का खाते हैं, कभी भूखे सो रहते हैं। हाँ, फकत झंडूशाह अमीड़ आदमी हैं हमारे इस मुहल्ले में।

[**चपरासी का जाना, और शामो, मालिन और हरिया का बाहर आना**]

शामो—

तो अब क्या होगा ? (रोती है, और नाक साफ़ करती है।)

गंडूशाह—

कोई हड़ज नहीं, झंडूशाह को भी तो बुलाया है फड़ंगी ने। तुम रोती क्यों हो ?

शामो—

रोती इसलिए है कि यह तुम पर इलतजाम किसने लगा दिया है ?

हरिया—

किसी दुसमन का काम है।

गंडूशाह—

यह तो मैं पहले ही समझता था, किसी दुसमन का काम है। (हरिया से) हड़िया !

हरिया—

हाँ शाह जी।

गंडूशाह—

तुम एक काम कड़ो, रानी* को तो जड़ा बुला लाओ भाग कर।

हरिया—

लो, वह आप ही आ गई है। कहिए क्या आज्ञा है?

—लेखक

(नाइन का प्रवेश)

गंडूशाह—

रानी!

नाइन—

(छोटा-सा घूँघट निकालकर) हाँ लालाजी!

गंडूशाह—

तुम हमाड़ी जड़ा मदद कड़ो।

नाइन—

क्या लालाजी!

गंडूशाह—

हमाड़ी असबाब एक दिन के लिए अपने घड़ में रख लो। बस इतनी ही बात है।

नाइन—

मगर क्यों? मामला क्या है?

शामो—

मामला यह है कि किसी ने इलतजाम लगा दिया है हम पर। फड़ंगी साहब का चड़फाँसी आया हुआ है।

नाइन—

(घबराकर) हैं! चड़फाँसी आया है।

---

* पंजाब में नाई को राजा और नाइन को रानी बोलते हैं।

शामो

खौफ की बात नहीं। लालाजी ने सरबत-पानी के लिए उसे एक रुपया दे दिया है।

नाइन—

देखना लाला! हम पर कोई आफत न आ जाये!

गंडूशाह—

नहीं नहीं, मजाल है। रानी, तुम्हारा हक़ हम नहीं रखेंगे। (हरिया से) हड़िया!

नहीं रानी! मज़ाल है, तुम पर कोई आफत नहीं आ सकती। तुम्हे कोई कुछ नही कह सकता। क्या हम मड़ गये हैं? तुम जड़ा फिकड़ न करो। (हरिया से) ओ हड़िया!

हरिया—

हाँ लालाजी!

गंडूशाह—

चलो, साड़ा असबाब उठा उठाकर रानी के घड़ पहुँचा दो। साम तक घड़ खाली हो जाय। तलासी होगी—तलासी। और जो चीज रह जायेगी, जबत हो जायेगी।

नाइन—

लालाजी!.......... ।

गंडूशाह—

तुम कुछ फिकड़ न करो। रानी! मजाल है।

(डरते-डरते साफ़ा गले में डालकर चले जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

स्थान—झंडूशाह के मकान का एक कमरा

समय—दिन के नौ बजे

[झंडूशाह बैठे खिचड़ी खा रहे है। उनकी स्त्री रामदेवी सामने बैठी पङ्खा कर रही है। दोनों बातें कर रहे हैं।]

झडूशाह—

बरकत की माँ! दही कितने का मँगवाया था तुमने? (खिचड़ी खाते हैं।)

रामदेवी—

(पङ्खा करते हुए) दो पैसे का।

गडूशाह—

तुम मेड़ा दिवाला निकाल दोगी? (खाते हैं।)

रामदेवी—

क्यो? क्या अब यह भी कोई फजूलखड़ची है?

झडूशाह—

(एक घुँट पानी पीकर) क्यों नही? इस तड़े तो हम उजड़ जायँगे। एक पैसे का मँगवाया करो। एक पैसा बहुत होता है।

रामदेवी—

अच्छा, अब एक ही पैसे का मँगवाया करूँगी।

झडूशाह—

(डकार लेकर) बरकत की माँ!

रामदेवी—

हाँ बरकत के लाला!

झंडूशाह—

थोड़ी-सी खिचड़ी डाल देना और। बड़ी मजेदाड़ बनी है।

रामदेवी—

(खिचड़ी देकर) अब मेरी नथ बनकर आवेगी ?

झंडूशाह—

आ जायगी। (मुँह भरा हुआ है।)

रामदेवी—

सामो की तो बन कर पुड़ानी भी हो गई, और आप अभी 'आ जायगी, आ जायगी' ही कह रहे हैं।

झंडूशाह—

वह अमीड़ है।

रामदेवी—

और, हम गड़ीब हैं ?

झंडूशाह—

उनके सामने तो गड़ीब ही हैं।

रामदेवी—

बस, बस। जब कुछ माँगो, उस बख्त गड़ीब बन जाते हैं। यह बहाना खूब मिला है। ...... लो (गाल पर हाथ रखकर), खिचड़ी में घी डालना तो भूल ही गई।

झंडूशाह—

दही तो था, कोई हड़ज नही। तुम्हे नथ का ख़्याल रहता है, और सब काम भूल जाती हो।

(हरदेवी का प्रवेश)

हरदेवी—

ड़ामो ! ड़ामो !

रामदेवी—

क्यों हड़ो ? मैं बरकत के बाप को रोटी खिला रही हूँ। क्या काम है ?

हरदेवी—

तुम्हारे दरवज्जे पर चड़फाँसी खड़ा है।

रामदेवी—

(खड़ी होकर) चड़फाँसी आये तुम्हारे घड़। चड़फाँसी आये तुम्हारे बाप के घड़। हमने कोई चोड़ो की है ? जुआ खेला है ? डाका माड़ा है ? हमारे घड़ चड़फाँसी क्यों आये ?

हरदेवी—

लड़ती क्यों हो ? बाहड़ निकलकर देख लो कि मैंने सच कहा है या झूठ कहा है ?

झंडूशाह—

(खिचड़ी छोड़कर) देखो तो ...... (रामदेवी का बाहर जाना और पिछले पाँवों लौटना)

झंडूशाह—

क्यों, क्या है ? बोलो।

रामदेवी—

सचमुच चड़फाँसी है। चड़फाँसी !

झंडूशाह—

चड़फाँसी ? क्या पेटीवाला चड़फाँसी ?

रामदेवी—

हट जाओ, मुझे लेट जाने दो। मेरा दिल घबड़ा रहा है। बरकत की माँ ! (ठण्डी साँस भरकर) बरकत की माँ ! मेरा दिल घड़बा रहा है।

रामदेवी—

(रोकर) हौसला करो।

झंडूशाह—

मेरा दिल घड़बा रहा है, हौसला क्या करूँ।

हरदेवी—

मगड़ इसमें क्या होगा ? हौसला करो, और पूछो, मामला क्या है ?

झंडूशाह—

मगड़ मेरा दिल घड़बा रहा है, मेरा दिल घड़बा रहा है।

रामदेवी—

बड़फ़ मँगवाऊँ ? (ठण्डी साँस भरकर) देवीमाता, तेरा ही आसड़ा है। महावीड़, तेरा ही आसड़ा है।

[झंडूशाह लेटकर साँस रोक लेते हैं। रामदेवी चिल्लाने लग जाती है। सहसा गंडूशाह अन्दर आते हैं।]

गंडूशाह—

हौसला करो, लालाजी ! हौसला करो। चलो, चलकर पूछते हैं कि हमने क्या किया है ? फड़ंगी साहब कोई खा जायगा हमें ? चलो।

झंडूशाह—

शाहजी ! तुम मेरे साथ चलोगे ?

गंडूशाह—

चलूँगा क्यों नहीं। चलो, चलते हैं।

झंडूशाह—

तुम भी चलोगे ? तुम्हारी बड़ी मेहड़बानगी होगी।

गंडूशाह—

बड़ी मेहड़बानगी कैसी ? मुझे भी बुलाया है फड़ङ्गीसाव ने। चड़फाँसी मेरे घड़ भी गया था अभी अभी।

झंडूशाह—

यह बात है, तो फिकड़ क्या है ?

गंडूशाह—

चलो चलें। देखें, क्या कहता है फड़ङ्गी साव। क्या हमें खा जायेगा। हम भी लाहौड़िये हैं।

झंडूशाह—

चलो। (मुड़कर) बरकत की माँ !

रामदेवी—

(घूँघट के अन्दर से) हाँ !

झंडूशाह—

हौसले से रहना, फिकड़ क्या है ?

रामदेवी—

जड़ा नड़मी से बातचीत करना। जोड़ जोड़ से न बोलना।

झंडूशाह—

तुम फिकड़ मत करो। मेरे साथ लाला गंडूशाह भी तो हैं। (जाने के लिए तैयार होते हैं।)

रामदेवी—

जड़ा ठहर जाओ, सगन लेकर जाओ।

गंडूशाह—

बड़ी विद्यावान है।

रामदेवी—

पूरनदेवी! ओ पूरनदेवी!!

पूरनदेवी—

हाँ, भाभी!

रामदेवी—

पानी का लोटा लेकर आगे खड़ी हो जा जड़ा।

पूरनदेवी—

इसमें कुछ डालेंगे?

रामदेवी—

हाँ, डालेंगे। (शंकरदास अन्दर आता है।)

शंकरदास—

ड़ाम-ड़ाम, शाहजी! ड़ाम-ड़ाम!

झंडूशाह—

भई! बचकर आ गये, तो ड़ाम-ड़ाम भी हो जायगी! अभी तो फँस गये हैं। ड़ाम-ड़ाम क्या करें?

शंकरदास—

क्यों, क्या बात है? आप कुछ घड़बाए हुए हैं।

हरदेवी—

आज हमारे घड़ चड़फाँसी आया है।

शंकरदास—

ड़ाम-ड़ाम कहीं चड़फाँसी मुझे न देख ले। गड़ीब का खून हो जायगा। महाड़ाज माफ़ करना। पर क्या करें, समा नाजक है। आप तो जानते ही हैं कि हम आपके ताबेदाड़ हैं। पर क्या करें समा नाजक है। इसलिए (जाने को मुड़कर) ड़ाम-ड़ाम।

(चले जाना)

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

तुमने सुना, समा नाजक है ?

झंडूशाह—

हाँ भई ! न चड़फाँसी हमारे घड़ आता, न यह बातें सुनते। अगर बचकर आ गये, तो (ठण्डी साँस भरकर) सुकर करेंगे अभी तो फँसे हुए हैं !

गंडूशाह—

हौसला करो, झंडूशाहजी ! हौसला करो मज़ाल है। कोई हमने खून किया है, कतल किया है। फड़ङ्गी साहब से चलकर पूछते हैं। फिकड़ क्या है !

झंडूशाह—

(घबराहट को छिपाकर) नहीं, फिकड़ क्या है, फिकड़ क्या है ! (उदास होकर) परन्तु एक बात है, गंडूशाह ! इस चड़फाँसी को देखकर मेरा दिल घड़बा जाता है, हाथ-पाँव फूल जाते हैं। जमदूत लगता है, जमदूत।

गंडूशाह—

खौफ़ तो मुझे भी लगता है। मगड़—

झंडूशाह—

मगड़ क्या !

गंडूशाह—

फिकड़ न करो। कोई हड़ज नहीं (ऊँची आवाज़ से) पूरनदेवी दरवज्जे पर आ गई ?

रामदेवी—

(घूँघट के अन्दर से) हाँ, आई है !

झंडूशाह—

तो आओ, चलें ।

गंडूशाह—

चलो झंडूशाह ! कहीं फड़ङ्गी साहब का चड़फाँसी गुस्सा न हो जाय । महावीड़ ! तेरा ही आसड़ा है । (दोनो जाते हैं ।)

तीसरा दृश्य

स्थान—कचहरी में डिप्टी कमिश्नर का कमरा

[डिप्टी कमिश्नर के सामने कागजों का ढेर लगा है, और वह देख-देखकर उन पर दस्तखत करता जाता है। एक ओर रीडर बैठा है। दरवाज़े पर अरदली खड़ा है। एकाएक डिप्टी कमिश्नर सिर उठाता है।]

डिप्टी कमिश्नर—

वैल रीडर !

रीडर—

हुजूर !

डिप्टी कमिश्नर—

यह टुमारा लोग टाइम का कोई परवा नहीं करटा। इटना डेर होगया। वह लोग अभी टक नहीं आया।

रीडर—

हुज़ूर ठीक फ़रमाते हैं। हम लोगों में यह बहुत बड़ा ऐब है।

डिप्टी कमिश्नर—

आस्ते आस्ते ठीक हो जायगा।

रीडर—

ठीक है हुज़ूर जनाब का ख़याल बिलकुल ठीक है।

डिप्टी कमिश्नर—

जूं जूं टालीम बढ़ता जाएगा, यह ऐब डूर होटा जाएगा।

रीडर—

हुज़ूर ठीक है। हमें अभी तालीम की बहुत जुरूरत है।

डिप्टी कमिश्नर—

वैल अरडली !

अरदली—

(दौड़कर) हुज़ूर !

डिप्टी कमिश्नर—

सब-जज हसंडीन को हमारा सलाम बोलो।

अरदली—

बहुत अच्छा, हुज़ूर। (अरदली जाता है।)

रीडर—

हुजर, हाज़री आगई है।

डिप्टी कमिश्नर—

वैल, अभी सब-जज आटा है।

रीडर—

वह इंज़ार करेंगे। इतने में हुज़ूर हाज़री खा लेंगे। टाइम होगया है। और आप टाइम के पाबन्द हैं।

डिप्टी कमिश्नर—

हम चाहटा है, आप लोग भी टाइम का इसी तरह पाबन्द हो।

रीडर—

हुज़ूर की मेहरबानी से सब ठीक हो जाएगा।

(डिप्टी कमिश्नर दूसरे कमरे मे चला जाता है। सब-जज हसनदीन का प्रवेश।)

रीडर—

(खड़े होकर) सलाम हुज़ूर !

सलाम। (इधर उधर देखकर) साहब कहां है ?

रीडर—

हाज़री खाने गये हैं।

हसनदीन—

(कुरसी पर बैठकर) मेरी तलबी क्यों हुई है ?

रीडर—

साहब बहादुर ने सैदमिट्ठा बाज़ार के दो रईसों को बुलवाया है। उनको आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाने का इरादा है। मगर दोनों बिलकुल अनपढ़ हैं। उनको तो बात करने की भी तमीज़ नहीं।

हसनदीन—

(सिगरेट सुलगाकर) कौन कौन हैं ?

रीडर—

एक तो गंडूशाह हैं।

हसनदीन—

अच्छा ! और दूसरे ?

रीडर—

दूसरे झंडूशाह हैं।

हसनदीन—

अमीरी, शराफत और रुसूख में तो दोनो एक दूसरे से बढ़-चढ़कर हैं।

रीडर—

इसमें क्या शक है। साहब की नज़र इंतख़ाब की दाद देनी चाहिए। क्या लाजवाब मोती तलाश किये हैं कि उनका सानी सारे शहर में दस्तयाब न हो सके। मगर ज़रा सीधे हैं, सो धीरे-धीरे ठीक हो जाएँगे।

हसनदीन—

(सिगरेट का कश लगाकर) वाक़ई, वाक़ई।

(चपरासी का प्रवेश)

रीडर—

आये वह लोग ?

चपरासी—

हुज़ूर, आये तो हैं। मगर अंदर आने से डरते हैं। उनको डर है कि कहीं कोई जरीमाना न कर दे—क़ैद न कर दे—फाँसी न दे दे।

रीडर—

नहीं-नहीं। उनको समझा दो कि साहब डिप्टी कमिश्नर उनसे मुलाक़ात करना चाहते हैं, और यह कि उनको घबराना नहीं चाहिए।

चपरासी—

मगर वह समझें भी।

(साहब का प्रवेश)

साहब —

हलो मिस्टर हसनडीन ! How do you do ? (हसनदीन ! आपका मिज़ाज कैसा है ?)

हसनदीन—

(उठकर और सिगरेट फेंककर) How do you do Sir (जनाब का मिज़ाज कैसा है ?)

साहब—

(कुरसी पर बैठकर) वैल रीडर, वह लोग आये ?

रीडर—

हाँ हुजूर, बाहर खड़े हैं। बुला लूँ ?

साहब—

Yes (हाँ ! बुला लो।)

(रीडर बाहर जाता है, और थोड़ी देर बाद गंडूशाह और झंडूशाह का साथ लेकर वापस आता है। झंडूशाह और गंडूशाह दोनों झुककर सलाम करते हैं, और दरवाजे के पास ज़मीन पर बैठ जाते हैं। दोनों के चेहरों पर घबराहट के चिह्न दिखाई दे रहे हैं। हसनदीन और रीडर हँसते हैं, परन्तु हँसी रोकते हैं।)

साहब—

नहीं नहीं सेठ साहब ! आगे आ जाओ, चौकी पर बैठो।

गंडूशाह—

नहीं साहब ! हम यहीं अच्छे हैं। रङ्काड़ की बड़ाबड़ी करना क्या ठीक है ?

झंडूशाह—

(हाथ जोड़कर) फड़ंगी साहब ! आपकी मेहड़बानगी। हम यहीं अच्छे हैं।

साहब—

नो नो, आगे आ जाओ, चौकी पर बैठो। वह जगह अचा नहीं है, आगे आ जाओ। जल्दी करो—Make haste.

गंडूशाह—

(हाथ जोड़कर) नहीं फड़ंगी महड़ाज ! हम बड़े अच्छे बैठे हैं। आपकी मेहड़बानगी है। ग़ड़ीबों की पड़बड़िस है। यही जगह अच्छी है।

झंडूशाह—

(हाथ जोड़कर) नहीं, बिलकुल कोई फ़िकड़ नहीं। हम आपके ताबेदाड़ हैं। हम आपके बड़ाबड़ भला बैठ सकते हैं ?

गंडूशाह—

हमारी मज़ाल है।

साहब—

(हँसकर) नो आगे आ जाओ मैन, चौकी पर बैठो।

रीडर—

आप साहब के पास चलकर बैठ जायँ, वर्ना वह ख़फ़ा होंगे। अँगरेज़ लोग इस तरह के तकल्लुफ़ से बहुत परेशान होते हैं।

झंडूशाह—

(घबराकर) गंडूशाह !

गंडूशाह—

हाँ भई झंडूशाह !

झंडूशाह—

हमने फड़ंगी साहब को क्या कोई तकलीफ़ दी है ?

गंडूशाह—

बिलकुल नहीं, हमारी मज़ाल है।

गंडूशाह—

तो यह क्यों कहते हैं, कि हमने साब को तकलीफ़ दी है।

रीडर—

तकलीफ़ नहीं, मैंने तकल्लुफ़ कहा था। आप आगे चलकर साहब के क़रीब बैठ जायँ। यहाँ बैठने से यह ख़फ़ा होंगे।

गंडूशाह—

(संकोच से) झंडूशाह ?

झंडूशाह—

चलो, फिर क्या किया जाय ? जैसी हाकम की मड़जी वैसी हमाड़ी मड़जी। हम तो हुकम के गुलाम हैं।

गंडूशाह—

क्या बात कही है तुमने—हम हुक्म के गुलाम हैं।

(दोनों जूते उतारकर डरते-डरते साहब के पास जाकर बैठ जाते हैं।)

साहब—

हम आपको देखकर बहोट खूस हुआ।

झंडूशाह—

बहुत अच्छा, फड़ंगी महड़ाज बहुत अच्छा। आपकी खुसी ही चाहिए।

साहब—

आप अची तरे बैठ जायें।

गंडूशाह—

फड़ंगी महड़ाज ! हम तो चड़फाँसी को देखकर डर गये थे। हमने क्या अकसीर की है ? गड़ीब लाहौड़िए हैं, हम तो किसी से लड़ते-झगड़ते भी नहीं। हम तो किसी को गाली भी नहीं देते।

साहब—

टुम बहोट Wealthy है, अमीर आदमी है।

गंडूशाह—

अमीड़ ? अमीड़ कौन है, हम तो बड़े ही गड़ीब लाहौड़िये हैं। बेसक तलासी ले लें, बेसक चड़फाँसी से पूछ ले।

साहब—

क्या बोलने माँगटा है टुम लोग ?

झंडूशाह—

(धीरे से) गंडूशाह ! मुझको क्यों फँसाता है। अपनी तलासी करा, मेरी तलासी क्यों कराता है।

गंडूशाह—

मजाल है। (ऊँचे स्वर से) फड़ंगी साहब ! हम सच कहते हैं, हम दोनों अमीड़ नहीं हैं, हम दोनों बड़े गड़ीब हैं।

झंडूशाह—

(सिर से पगड़ी उतारकर और साहब के पाँव में रखकर) फड़ंगी साहब ! हम बड़े गड़ीब हैं। हमने क्या कुसूड़ किया है ? हम गड़ीब, हमाड़ा बाप गड़ीब, हमाड़ा दादा गड़ीब ।

(हसनदीन और रीडर हँसते हैं।)

साहब—

(हसनदीन से) Well, I can't understand. Aren't they the right persons ? (मुझे कुछ पता नहीं लगता, क्या यह वही रईस नहीं हैं ?)

हसनदीन—

Yes, they are. (हाँ, यह वही हैं)

साहब—

But what do they say ? (परन्तु यह क्या कह रहे हैं ?

हसनदीन—

They are ignorant of the fact that they are going to be appointed magistrates. (परन्तु इस बात को वे नहीं जानते कि मजिस्ट्रेट बनाये जायँगे ।)

साहब—

Well, you explain it to them. (तुम इनको समझाओ ।)

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ, भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

यह गिटपिट क्या हो रहा है ? मालूम होता है, हमारे ही बाड़े में तकड़ाड़ हो रही है । (साहब की ओर मुड़कर) फड़ंगी साहब ! (हाथ जोड़कर) मैं बिलकुल गड़ीब आदमी हूँ । मेरा बाप भी गड़ीब आदमी था । हमको दो

बखत खाना भी नसीब नहीं होता। किसी ने गलत इलतजाम लगा दिया है। मैं बिलकुल गड़ीब आदमी हूँ। बेसक चड़फाँसी से भी पूछ लो।

साहब—

बैल, क्या बोलने माँगटा ? (हसनदीन से) बाबू !

हसनदीन—

(दोनों साहूकारों से) सुनो, साहब ने तुम्हें कोई सज़ा देने के लिए नहीं बुलाया। समझे ?

झंडूशाह—

हाँ, तो चड़फाँसी क्यों गया था हमारे घड़। हम पर बड़ी जबरजस्ती हुई है। हमारी तो सहर भर में सोहरत हो गई है। हमारी अखबाड़ें छप जायँगी। हमारी बेइज्जती खड़ाब हो गई हैं।

गंडूशाह—

फड़गी साहब ने हमको क्यों बुलाया है ? हमने तो कोई अकसीर नहीं की ?

हसनदीन—

साहब बहादुर तुमको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाना चाहते हैं। समझे ?

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भाई गंडूशाह !

गंडूशाह—

कुछ समझे ?

झंडूशाह—

हाँ, साहब हमें 'कमसलेट' का ठेका देना चाहते हैं।

गंडूशाह—

(उत्साह से) तो कोई हड़ज नहीं, कोई हड़ज नहीं। हम 'कमसलेट' का ठेका ले लेंगे। कोई हड़ज नहीं, क्यों झंडूशाह ?

झंडूशाह—

मान लो। चार पैसे की कमाई हो जाएगी। कमसलेट में नुकसान नहीं होता।

हसनदीन—

नहीं नहीं, कमसरियट का ठेका नहीं, साहब तुम्हें डिप्टी बनाना चाहते हैं। कहो, मंजूर है? समझे डिप्टी!

गंडूशाह—

मगर डिप्टी तो काने को कहते हैं।

झंडूशाह—

(सिर हिलाकर) हमको मंजूर नहीं। गंडूशाह को मंजूर हो, तो हो; मुझको तो बिलकुल मंजूर नहीं। क्यों गंडूशाह?

गंडूशाह—

मुझे भी मंजूर नहीं।

हसनदीन—

नहीं नहीं, हौसला रक्खो। साहब बहादुर तुम्हें डिप्टी बनावेंगे। तुम कचहरी किया करोगे। तुम मुक़दमे सुना करोगे। तुम लोगों को सज़ाएँ दिया करोगे। समझे?

गंडूशाह

(इतना मुँह खोलकर कि उसमें मक्खी भी जा सके) हाँ, समझे, यह बात है। क्यों झंडूशाह?

झंडूशाह—

अच्छा है अच्छा है। क्या हर्ज है? ओहदा मिलता है। (हसनदीन से) बाबू जी। कुछ तलब भी मिलेगी या नहीं?

गंडूशाह—

मिलेगा क्यों नहीं? क्यों बाबूजी?

हसनदीन—

(सिर हिलाकर) तलब-वलब कुछ नहीं मिलेगी। मुफ्त काम करना होगा—मुफ्त। समझे?

गंडूशाह—

झंडूशाह!

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह!

गंडूशाह—

सुना?

झंडूशाह—

तो क्या हम बहरे हैं?

हसनदीन—

समझे?

झंडूशाह—

तो क्या हम बेवकूफ हैं?

गंडूशाह—

मगर यह जरीमाना किस कुसुड़ पर है? हमने क्या पाप किया है! (साहब से) फड़ंगी साहब! (हाथ जोड़कर) ए फड़गी साहब जी। हम गड़ीब लाहौड़िए हैं, हम पर मेहड़बानगी की जाय। कोई खता तो हमने नहीं की। यह मुफ़्त की सजा क्यों?

हसनदीन—

तुम दोनों ग़लती पर हो। समझे? गवर्नमेंट की मेहरबानी है कि वह तुम लोगों पर ख़ुश हुई है। इसी लिए यह इज़्ज़त तुमको बख़्शी गई है। शहर में तुम्हारी इज़्ज़त बढ़ जायगी, लोग तुम्हें सलाम करेंगे। तुमको क़ैद और जुर्माना करने के इख़्तियारात हासिल होंगे। क्या यह मामूली बात है! लोगों में यह रुतबा बड़ा बुलंद है। तुमको ख़ुश होना चाहिए। समझे!

गंडूशाह—

(आधी बात समझकर) ओहदा तो बड़ा है, पर खायँगे कहाँ से। क्यों झंडूशाह, तुम्हारा क्या ख्याल है?

झंडूशाह—

खाने को सड़काड़ देगी, फिकड़ क्यों करते हो तुम!

हसनदीन—

तुम हमेशा कचहरी नहीं करोगे, कभी-कभी करोगे। और उन दिनों में भी बारह बजे आये, और दोपहर को दो बजे चले गये। समझे ?

गंडूशाह—

क्यों झंडूशाह। मंजूर कर लें ? मेरा तो ख्याल है, कोई हड़ज नहीं। लोग सलाम करेंगे।

झंडूशाह—

और अगर कोई बोले, तो क़ैद कर देंगे। लखमीचंद ने हमारे मकान पर पड़नाला निकाला था। अब.....

गंडूशाह—

और, जो फकीड़िया हलवाई दूध में हमेसा पानी मिला देता है, उससे आज ही चलकर कहे देते हैं कि अब सँभल जाओ, नहीं तो छः महीने के लिए कैद कर दूँगा। हजार रुपया जरीमाना कर दूँगा।

झंडूशाह—

(सिर ऊँचा उठाकर) मंजूर कर लो, मेरी तो यही सलाह है। काम कम है, इज्जत ज्यादा है।

गंडूशाह—

(साहब से) मंजूर है, फड़ंगी साहब ! मंजूर है।

हसनदीन—

(साहब से) They accept it (उन्हें मंजूर है।)

साहब—

That's alright (दोनों साहूकारों से) हम बहोट खुस है। (उठकर) अच्चा, सलाम। पहली तारीख़ से टुम लोग कचहरी करेगा। (गंडूशाह से) सलाम। (झंडूशाह से) सलाम।

गंडूशाह—

(हसनदीन से) तो फिर कब से ? (सिर खुजलाता है।)

हसनदीन—

अँगरेज़ी महीने की यकम तारीख़ से। समझे ? कहीं भूल न जाना।

झंडूशाह—

मज़ाल है, मज़ाल है।

साहब—

अब आप लोग जा सकटा है। सलाम।

झंडूशाह—

परमेसर आपको पटवाड़ी बना दे। थानेदार बना दे।

(साहब और हसनदीन का जाना)

गंडूशाह—

झंडूशाह ! फड़ंगियों की संगडांद*कब होगी ?

झंडूशाह—

क्यों फड़ंगी साहब के मुनीमजी ! फड़ंगियों की संगड़ांद* कब होगी ?

रीडर—

(हँसकर) फरंगियों की सगरांत क्या ?

झंडूशाह—

तुम फड़ंगियों की संगड़ांद नहीं समझते ?

गंडूशाह—

(अभिमान से सिर ऊँचा करके) गड़ेजी-महीने की पहली तारीख़। समझे ! अब बोलो।

रीडर—

(हिसाब करके) आज से पंद्रहवें दिन।

गंडूशाह—

तो उसी दिन से हम कचहड़ी करेंगे ?

रीडर

हाँ शाहजी ! उसी दिन से।

गंडूशाह—

झंडूशाह !

* हिंदुओं में पहली तारीख़ को संक्रांत कहते हैं। गंडूशाह अंग्रेज़ी महीने की पहली तारीख़ को अँगरेज़ों की संक्रात कहता है।

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

तो आओ अब चलें। घड़ के लोग घड़बा रहे होंगे। उनको चलकर यह खुसखबड़ी सुनावें। वह घड़बा रहे होंगे।

झंडूशाह—

और चलकर सवा रुपये के लड्डु बाँटेंगे। आओ जल्दी चलें, और देखें, अब वह संकरदास का बच्चा क्या कहता है ?

गंडूशाह—

चलो। (रीडर से) फड़ंगा साहब के मुनीमजी ! ड़ाम-ड़ाम।

रीडर—

(हँसकर) राम-राम, महाराज, राम राम

झंडूशाह—

फडंगी साहब के चड़फाँसीजी तुम्हें भी ड़ाम-ड़ाम।

चपरासी—

राम-राम झंडूशाहजी राम राम ! कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई आपको ?

झंडूशाह—

तुम्हारी मेहड़बाग्नगी चाहिए भाई चड़फांसी।

गंडूशाह—

परमेसर तुमको चार चार लड़का दे।

(दोनों जाते हैं।)

रीडर—

चपरासी !

चपरासी

हुज़ूर।

रीडर—

ये तो बिलकुल अनपढ़ हैं।

चपरासी—

मुझे देखकर इनकी जान निकल गई थी। कहते थे, किसी तरह पीछा छुड़वाओ। मगर अब तो ख़ुश हो गये हैं। आपको फिरंगी का मुनीम कहते हैं।

रीडर—

और तुम्हें चड़फाँसी। (हँसकर) क्या उमदा नाम दिया है तुम्हें!

चपरासी—

और मुझे देखकर सहम गये थे, जैसे किसी ने गोली मार दी हो। औरतें चिल्लाने लगीं, जैसे तबाही आ गई हो। मुहल्ले-भर में शोर मच गया था।

रीडर—

चार दिन बाद यह मुक़दमों का फैसला करेंगे!

चपरासी—

सरकार की मरज़ी है। जिस पर निहाल हो जाय, उसका नसीब खुल जाता है। चार दिन बाद यही बड़े बड़ों से बढ़ जायँगे। (सड़क की ओर देखकर) हुज़ुर!

रीडर—

क्यों, क्या है?

चपरासी—

(हँसी के मारे लोट-पोट होकर) देखिए, दोनों मिठाईवाले से झगड़ रहे हैं। कह रहे हैं, मिठाई कम देगा तो क़ैद कर लेंगे।

रीडर—

(देखकर) इसमें शक ही क्या है, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट मुक़र्रर हुए हैं—जो चाहें, कर दें।

(परदा।)

चौथा दृश्य

स्थान—गंडूशाह मुहल्ले का एक भाग

समय—चाँदनी रात

[चाँदनी खिली हुई है। अभी रात्रि अधिक नहीं गई। मकानों से धुआँ उठ रहा है, और उनमें रह-रहकर बच्चों के शोर की आवाज़ें आ रही हैं। कभी-कभी कुत्तों के भौंकने की आवाज़ भी सुनाई देती है। गंडूशाह और झंडूशाह बातें करते प्रवेश करते हैं।]

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

कल फड़ंगियों की संगड़ाँद है।

झंडूशाह—

फड़ंगियों के महीने की पहली तारीख।

गंडूशाह—

हाँ, पहली तारीख़। कल ही से हम कचहड़ी करेंगे !

झंडूशाह—

अब कोई हमारे सामने सिर उठा जाय, तो क़ैद कर दें, जरीमाना कर दें, बेत लगवा दें।

गंडूशाह—

मज़ाल है, मज़ाल है। अब हमारे सामने कोई नहीं बोल सकता। मगर (एकाएक उदास होकर) झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

हम कचहड़ी कर भी सकेंगे या नहीं ? मुझे तो सक होता है इसमें।

झंडूशाह—

हौसला करो शाहजी ! हौसला करो। भला यह भी कोई मुसकिल काम है। कचहड़ी करना तो इतना आसान है (मुँह फुलाकर) जितना खिचड़ी खाना।

गंडूशाह—

मगर कैसे शाह जी ?

झंडूशाह—

सुनो ! मुकदमे आवेंगे। किसी को कैद कर दिया, किसी को छोड़ दिया। दरखासें पेस होंगी, किसी पर अँगूठा लगा दिया, किसी पर न लगाया। यही तो कचहड़ी है। यही तो कचहड़ी का काम है।

गंडूशाह—

मगर यह आपने सीखा कहाँ से ?

झंडूशाह—

मेरी बहन के सुसड़ के मामू का लड़का कचहड़ी में है। ये बातें उसने मुझे समझा दी हैं। मैं आपको समझा दूँगा। फिकड़ क्या है ? हौसला करो।

गंडूशाह—

(शान्ती की साँस लेकर, मानों मौत के मुँह से निकला हो, एकाएक साहस के साथ) मज़ाल है, मज़ाल है।

(एक स्त्री पास से गुज़रती है।)

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

चली गई है।

झंडूशाह—

और सलाम नहीं कर गई। हड़िया से कहो, उसे पकड़ लाओ।

गंडूशाह—

(ज़ोर से चिल्लाकर) हड़िया ! ओ हड़िया !

हरिया—

(मकान के अन्दर से) आया लालाजी ! आया।

गंडूशाह —

दूड़ चली गई, अब निकल गई होगी।

झंडूशाह—

मगर हमें सलाम तो नहीं कर गई। और हम डिप्टी साहब हैं। (ऊंची आवाज़ से) हड़िया ! अरे कहा मड़ गया उल्लू। सुनता ही नहीं।

(हरिया का प्रवेश)

हरिया —

शाह जी, मैं मरा नहीं, अभी जीता हूं।

गंडूशाह—

दौड़ो उस तरफ़ एक औड़त गई है। उसे पकड़ लाओ।

हरिया—

औड़त ?

झंडूशाह—

औड़त नहीं, तो क्या गाय ? बेवकूफ़ आदमी। सुनता है, और खड़ा-खड़ा मुँह देखता है। क्या गाय भी सलाम कर सकती है ?

गंडूशाह—

दौड़कर जा, और उसे पकड़ ला। वह सलाम नहीं कर गई। (मूँछों पर हाथ फेरकर) हम डिप्टी साहब हैं। और लोगों को हमें सलाम करना चाहिए, वर्ना डिप्टी बनने का फायदा ही क्या है ?

हरिया--

लालाजी। कुछ ख़राबी न हो जाय। यह पहले सोच लें।

गंडूशाह—

हम डिप्टी हैं। फड़ङ्गी साहब के चड़फाँसी ने कहा था। फड़ङ्गी साहब के मुनीम ने कहा था। फड़ंगी साहब ने आप कहा था। (हरिया से) तुम जाकर उसे पकड़ लाओ। वह सलाम नहीं कर गई। उसे सलाम करके जाने देंगे। हम डिप्टी साब हैं।

हरिया—

जैसी आपकी मड़जी। मगर है यह जबरजस्ती।

(जाता है।)

गंडूशाह—

झंडूशाह!

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह!

गंडूशाह—

हड़िया डरता है, खौफ खाता है, घड़बाता है।

झंडूशाह—

बेवकूफ़ आदमी है। समझा देना। कहीं ऐसा न हो कि खौफ से काम ही बिगाड़ दे। उसे मालम होना चाहिए कि उसका लाला अब डिप्टी हो गया है।

गंडूशाह—

मज़ाल है। मज़ाल है।

(एक बाबू का पास से गुज़रना)

झंडूशाह—

ओ आदमी! ओ भाई! ओ बाबू!

गंडूशाह—

ओ जानेवाले! ठहरो! ओ भाई, कहाँ जाता है? इधड़ आ, जड़ा इधड़ आ। (बाबू का ठहरना)

बाबू—

क्यों, क्या बात है? चीख़ते क्यों हो?

गंडूशाह—

हम चीखते हैं—हम ? हम—जो डिप्टी हैं ? तुम हमें जानते हो कि नहीं ? हम डिप्टी हैं। (टहलकर) सुना, हम डिप्टी हैं (थोड़ी देर के बाद) दोनों डिप्टी हैं। कल से कचहड़ी करेंगे। हम डिप्टी हैं, यह और मैं, दोनों डिप्टी हैं।

बाबू—

तो मैं क्या करूँ ?

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

सुनते हो, पूछता है, मैं क्या करूँ ? (ज़ोर से हँसकर) हहह ! पूछता है, मैं क्या करूँ ? बेवकूफ़ है, पागल है।

झंडूशाह—

(बाबू से) हमें सलाम करो, सलाम।

बाबू—

मगर क्यों सलाम करूँ ?

गंडूशाह—

क्योंकि हम डिप्टी हैं। सुना, हम डिप्टी हैं, डिप्टी।

बाबू—

हुआ करो, मुझे इससे क्या मतलब है ?

झंडूशाह—

हम जरीमाना कर देंगे, जरीमाना।

गंडूशाह—

नहीं नहीं, मैं इसे कैद कर दूँगा। जरीमाना तो इसके लिए कुछ भी नहीं। इसे कैद करूँगा।

(हरिया का आना। स्त्री भी पीछे-पीछे घूँघट निकाले सहमी हुई आती है।)

बाबू—

(हरिया से) तू कौन है ?

हरिया—

(डरकर) मैं इनका नौकर हूँ।

बाबू

मगर तू इसको क्यों साथ लाया है, हरामज़ादे, बदमाश, लुच्चे।

(क्रोध से कोट की बाहें चढ़ाता है।)

गंडूशाह—

(डरकर) झंडूशाह !

झंडूशाह—

(सहमकर) हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

काम तो खराब हो गया ! अब क्या करें ?

हरिया—

(काँपते हुए) मुझे इन्होंने आज्ञा दी थी ?

बाबू—

(गंडूशाह और झंडूशाह की ओर देखकर) यह आज्ञा आपकी है ? (दोनों चुप रहते हैं) मैं पूछता हूँ, यह आज्ञा आपकी है ? जवाब दो, आप में डिप्टी कौन है ? (ठहरकर) मै उसे सलाम करूँगा।

गंडूशाह—

(जल्दी से) मैं।

झंडूशाह—

और मै भी।

बाबू—

तो इसे (स्त्री की ओर संकेत करके) आपने पकड़ मँगवाया है। (दाँत पीसकर) मैं आपकी गरदन तोड़ दूँगा। डिप्टी बने हो कि खुदाई फ़ौजदार ! जो निकलता है, उसे ही पकड़ लेते हो। मैं तुम्हें सज़ा दिये बग़ैर यहाँ से नहीं जाऊँगा।

झंडूशाह—

गंडूशाह।

गंडूशाह—

हां भई झंडूशाह!

झंडूशाह—

अब जान बचाकर यहाँ से भागो।

(बाबू रास्ता रोककर खड़ा हो जाता है।)

बाबू—

ख़बरदार! यहाँ से हिले, तो मार-मारकर हड्डियाँ तोड़ दूँगा।

झंडूशाह—

(काँपते हुए) मैं नहीं हिलता।

गंडूशाह—

(हरिया की ओर सहायता की इच्छा से देखता हुआ) हड़िया!

हरिया—

मुझे इन्होंने भेजा था। मैं इनका नौकर हूँ। मेरा कोई कसूर नहीं।

दोनों—

(घबराकर) बाबूजी! फिर खता न होगी। अबके माफ कर दीजिए, फिर खता न होगी।

बाबू—

मैं भी कचहरी में नौकर हूँ।

गंडूशाह—

(उछलकर) झंडूशाह!

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह।

गंडूशाह—

यह भी फड़ङ्गी साहब का नौकड़ है। (बाबू से) फड़ङ्गी साहब के आदमी, सलाम। (साफ़ा गले में डालकर, हाथ जोड़कर) फड़ङ्गी साहब के आदमी! एक और सलाम। हमें मालम न था। सलाम! संलाम।

झंडूशाह—

(आगे बढ़कर) सलाम, फङ्ङी साहब के आदमी जी हमाड़ा भी सलाम।

बाबू—

अगर तुमने फिर ऐसी हरकत की, तो याद रखना, मैं.........

(क्रोध से आगे बढ़ता है। दोनों मजिस्ट्रेट डरकर भागते हैं; और गंडूशाह के मकान में घुसकर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लेते हैं। हरिया गली के कोने में छिप जाता है। बाबू अपनी स्त्री के साथ बड़बड़ाता हुआ चला जाता है।)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—कचहरी में एक कमरा

समय—सुबह

[गोपालदास रीडर और लालदीन चपरासी बातें कर रहे हैं। और नये मजिस्ट्रेटों की राह देख रहे हैं]

लालदीन

हुज़ूर देखें नये मजिस्ट्रेट कैसे आदमी हैं ?

गोपालदास—

परवा न करो, अभी मालूम हो जाता है। और बहुत कुछ तो मालूम हो ही चुका है।

लालदीन—

(घबराहट से) क्या जनाब—क्या मालूम हो चुका है ?

गोपालदास—

अनपढ़ आदमी हैं, मगर हैं दौलतमन्द और। इसी लिए मजिस्ट्रेट बना दिये गये। चपरासी को देखकर हाँफने लगते हैं। देखोगे, तो खुश हो जाओगे।

लालदीन—

हुज़ूर, स्वभाव के सख़्त तो नहीं हैं ?

गोपालदास—

अब यह तो आगे चलकर मालूम होगा। अभी क्या कह सकते हैं ? कि सख़्त हैं या नरम हैं। यह बात दो-चार दिन के बाद मालूम होगी।

(झंडूशाह और गंडूशाह का प्रवेश)

लालदीन—

(धीरे से) ये कौन हैं ?

गोपालदास—

चुप, यही हमारे नये मालिक हैं। (झड्डूशाह और गंडूशाह के सामने झुककर) सलाम, हुज़ूर।

झंडूशाह—

सलाम, फड़ंगी साहब के आदमीजी !

चपरासी—

(झुककर) सलाम, हुज़ूर !

गंडूशाह—

सलाम महड़ाज, सलाम ! (कपड़ा झाड़कर) आप भी फड़ंगी साहब के आदमी हैं ?

गोपालदास—

आप अंदर तशरीफ़ ले चलें। हम आपके नौकर हैं। यह आपका कमरा है।

गंडूशाह—

(उछलकर) तुम हमारे नौकड़ हो—दोनों नौकड़ हो ?

दोनों—

'हाँ, हुज़ूर, हम दोनों आपके नौकर हैं।

झंडूशाह—

(सिर हिलाकर) यह नहीं हो सकता। क्यों गंडूशाह ?

गंडूशाह—

हाँ भई झंडूशाह।

झंडूशाह—

यह कैसे हो सकता है ? हमारा नया-नया काम है। अभी से दो-दो नौकड़ रखने की क्या जरूरत ? जब काम चल निकलेगा, तो देखा जायगा। इस बखत हम नहीं रखते। (ठहरकर) चले जाओ, हम आप ही सब कुछ कर लेंगे।

हुज़ूर, हमारी तनख़्वाह गवर्नमेंट देगी।

झंडूशाह—

'गोलमन' कौन होता है ?

गोपालदास—

हुज़ूर, सरकार !

गंडूशाह—

लो, काम हमारा करेंगे, और तलब सड़काड़ देगी। यह भी कहीं हो सकता है? (सिर हिलाता है।) यह नहीं कभी हो सकता। तीन लोक में नहीं हो सकता। तीन काल में नहीं हो सकता।

झंडूशाह—

सड़काड़ क्या तलबें लुटा रही है। यह हो ही नहीं सकता। तुम जाओ बाबा, हम अपना काम आप कर लेंगे।

गोपालदास—

जनाब...

लालदीन—

हुज़ूर...

गंडूशाह—

यार, यह भी कोई जबरजस्ती है। हम नौकड़ नहीं रखते। बस, जाओ। जनाब! हुज़ूर! जान खाये जाते हैं।

गोपालदास

हुज़ूर, मैं सच कहता हूँ। हमारी तनख्वाह सरकार देगी। आप तसल्ली रखेंगे। हम आपसे नहीं माँगेंगे।

गंडूशाह—

झंडूशाह!

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह!

गंडूशाह—

इनसे कह दो कि अगर सड़काड़ ने न दी, तो हम भी नहीं देंगे।

झंडूशाह

बोलो, तुम्हें मंजूर है?

दोनों—

हाँ हुज़ूर, मंज़ूर है।

झंडूशाह—

मगर फिर न कहना कि हम आपकी खिड्मत करते रहे हैं।

गंडूशाह—

मज़ाल है, मज़ाल है! तो अंदर चलें?

(गोपालदास चिक उठाता है।)

गोपालदास—

चलिए हुजूर तशरीफ़ ले चलिए।

गंडूशाह—

(चौंककर) शरीफ़े? कहाँ हैं? (चारो तरफ़ देखता है।)

(गोपालदास दूसरी ओर मुँह करके हँसता है।)

चपरासी—

जनाब अंदर चले चलें। अब मुक़दमा पेश होनेवाला ही है।

(दोनों अंदर जाकर कुरसियों पर बैठ जाते हैं।)

झंडूशाह—

(गोपालदास से) तुम्हारा क्या नाम है?

गोपालदास—

हुजूर, गोपालदास।

झंडूशाह—

थोड़ा सा पानी तो पिलाओ।

गोपालदास—

बहुत बेहतर, हुजूर। (पानी का ग्लास भर देता है।)

झंडूशाह—

(गोपालदास से) मगर तुम हो कौन?

गोपालदास—

हुजूर, मिसलख्वाँ।

गंडूशाह—

(चौंककर) झंडूशाह!

झंडूशाह—

(पानी का ग्लास पीकर) हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

मगर मसाल तो रात को जलाई जाती हैं। दिन को तुम्हारा क्या काम ? क्यों गंडूशाह, क्या मसाल दिन में भी जलाते हैं ?

झंडूशाह—

मज़ाल है, मज़ाल है ! तो भाई मसालख़्वाँ, तुम इस वखत जाओ। अगर रात को काम हुआ, तो मसाल जलाकर ले आना, नहीं तो कोई ज़रूरत नहीं।

गंडूशाह—

क्या सौ की एक कही है तुमने !

गोपालदास—

नहीं हुज़ूर, आप नहीं समझे...

गंडूशाह—

(सिर हिलाकर) समझ गये हैं, समझ गये हैं, कोई इतने बेवकूफ नहीं हैं, डिप्टी हैं। हम सब समझते हैं।

गोपालदास—

मिसलख़्वाँ का काम मुक़दमों की कार्रवाई पढ़कर सुनाना है।

झंडूशाह—

झंडूशाह ! समझे। मिसलख़्वाँ मुनीम को कहते हैं। फड़ंगियों ने भी क्या क्या नाम रख लिये हैं अपने आदमियों के।

गंडूशाह—

याद रखना, भूल न जाना।

मज़ाल है, मज़ाल है।

(एक सिपाही का अभियुक्त को पकड़े हुए आना। अभियुक्त के हाथ में हथकड़ी है, और उसकी जंज़ीर सिपाही की कमर से बँधी है।)

सिपाही—

(झुककर) सलाम हुज़ूर !

गंडूशाह—

(सलाम की परवा न करके) झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह –

इनमें 'बेकानूनी' किसने की है, और पकड़कर कौन लाया है ? एक का हाथ बँधा हुआ है और दूसरे की कमर।

झंडूशाह—

(गहरे सोच में पड़कर) कुछ पता नहीं लगता। अजब मामला है। मसालख़ाँ जी !

गोपालदास—

जी हुज़ूर !

झंडूशाह—

क्या बात है ? कुछ जानते हो ?

गोपालदास—

जी यह (सिपाही की ओर इशारा करके) इस (अभियुक्त की ओर इशारा करके) को पकड़ लाया है।

झंडूशाह—

तो मामला क्या है ? इसने क्या कसूड़ किया है ?

सिपाही—

हुज़ूर, इसका दफ़ा चौंतीस में चालान हुआ है।

गंडूशाह—

(जीभ बाहर निकालकर) तो यह चौंतीसवीं बाड़ पकड़ा आया है। बड़ा बजमास है।

झंडूशाह—

(आश्चर्य से) चौंतीसवीं बाड़ ! हड़े हड़े ! ड़ाम ड़ाम ! चौंतीसवीं बाड़ ?

गोपालदास—

नहीं हुज़ूर, इसका यह मतलब नहीं।

झंडूशाह—

(कुरसी दूसरी ओर को फेरकर) हाँ, यह मतबल नहीं ? तो फिर क्या मतलब है ? तू ही बता दे।

गोपालदास—

हुज़ूर ! इसने ज़ेरे दफ़ा ३४ जुर्म किया है।

गंडूशाह—

(झंडूशाह से) कुछ समझे ?

झंडूशाह—

(सिर हिलाकर) बिलकुल नहीं। (गोपालदास से) वह जेड़का क्या होती है फड़ंगियों के मुनीम साहब !

गोपालदास—

इसने शाराए* आम पर पेशाब किया है।

झंडूशाह—

साहराम क्या ? क्या यह किसी आदमी का
पेस करो।

गोपालदास—

जी नहीं शाराह—ए—आम का मतलब है—सड़क गली रास्ता

गंडूशाह—

तो फिर क्या हुआ ? इसमें जुड़म क्या है ?

झंडूशाह—

कुछ भी नहीं।

गोपालदास—

हुज़ूर यह जुर्म है, और इसके लिए सज़ा दी जानी चाहिए।

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

---

* रास्ता

गंडूशाह—

अब सँभलकर रहना, कहीं तुम्हें भी यह चौंतीसवीं दफा (फा पर विशेष ज़ोर देकर) लग जायगी।

झंडूशाह —

हमें भी लग जायगी ! मगर हम तो डिप्टी हैं—डिप्टी।

गंडूशाह—

(अभियुक्त से) तुमने यह जुड़म किया है ? सच-मुच कह दो

अभियुक्त—

जी मैं इसे स्वीकार करता हूँ।

गोपालदास—

मानता है, हुज़ूर ! अपना जुर्म मानता है, सज़ा दीजिए।

झंडूशाह—

(अभियुक्त से) तुम्हें ६ महीने की कैद।

और, तुम्हें (सिपाही से) सात महीने की।

सिपाही—

(घबराकर) हुज़ूर !

झंडूशाह—

सिपाही जी ! जो कोई पेस हो, उसे सजा देनी पड़ती है। हम क्या करें, मजबूड़ हैं, हम क्या करें . हम क्या कर सकते हैं। किस तरा छोड़ दें ? हम मजबूड़ हैं। हम मजबूड़ हैं। हम डिप्टी हैं।

गोपालदास—

(धीरे से) हुज़ूर, सिपाही को, जो मुजरिम को पकड़कर लाया है, सज़ा नहीं दी जाती। और, यह जो आसामी को ६ महीने की क़ैद का हुक्म हुआ है, यह भी ज़्यादा है। कोई हलकी-सी सज़ा दे दीजिए।

गंडूशाह—

हलकी-सी ? याने थोड़ी-सी ! याने जरीमाना !

गोपालदास—

हाँ हुज़ूर ! जुर्माना।

गंडूशाह—

भंडूशाह !

भंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

बोलो, इसे कितना जरीमाना करें ? क्या सलाह है ?

भंडशाह—

(धीरे से) मेरी सलाह तो यह है कि इसे पचास रुपये जरीमाना करो। पच्चीस तुम्हें मिल जायेंगे, और पच्चीस मुझे। क्या हर्ज है ? कपड़े बन जायेंगे।

गंडूशाह—

ठीक है। (अभियुक्त से) देखो, मैं तुम्हें पचास रुपये जरीमाना करता हूँ, चालीस और दस, पचास।

गोपालदास—

हुज़ूर, यह सज़ा भी सख़्त है। इस जुर्म में जुर्माना मामूली होना चाहिए।

गंडूशाह—

(जल्दी से) तो चलो चार आने सही।

भंडूशाह—

ठीक है चार आने ही निकालो। अब तो ज़्यादा नहीं है,

(अभियुक्त चवन्नी निकालकर मेज़ पर रख देता है।)

गंडूशाह—

(क्रोध से) अरे देखता नहीं, बेवकूफ ! हम दो आदमी है, चवन्नी निकालकर रख दी। दो दुअन्नियाँ निकाल, दो दुअन्नियाँ !

भंडूशाह—

और, मुँह में बड़-बड़ न कर। हमारी पहली पहली आमदनी है। सुना, हमारी पहली आमदनी है।

गंडूशाह—

हाँ, पहली आमदनी। दो दुअन्नियाँ निकालकर रख दे।

(अभियुक्त चवन्नी उठाकर जेब में डाल लेता है, और दो दुअन्नियाँ मेज़ पर रख देता है। गंडूशाह और झंडूशाह तृषित नेत्रों से देख रहे हैं ! सिपाही और अभियुक्त चले जाते हैं। गंडूशाह एक दुअन्नी उठाकर देखता है, और फिर धोती में बाँध लेता है। दूसरी दुअन्नी उठाकर एक विशेष कटाक्ष से झंडूशाह की ओर सरका देता है।)

गंडूशाह—

झंडूशाह ! पहले देख लो, फिर न कहना कि खोटी दे दी।

झंडूशाह—

(दुअन्नी को देखता है।) बिलकुल खड़ी है। (धोती में बाँधकर) मैं कोई ऐसा आदमी हूँ, (फिर कुरसी पर बैठकर) फिकड़ न करो, हौसला रक्खो। मैं कोई ऐसा वैसा आदमी नहीं हूँ।

गोपालदास —

हुज़ूर !

गंडूशाह—

अब तुम्हें क्या दें मशालखाँ जी ! दो-दो आने ही तो हमें मिले हैं। मुसिकल से तेल का खड़च चलेगा।

झंडूशाह—

बड़ी मुसिकल से। (एकाएक याद करके) पर तुमने तो कहा था कि तुम दोनों को फड़ंगी सड़काड़ से तलब मिलेगी।

गंडूशाह—

(उछलकर) और, अब दुअन्नी देखकर मुँह में पानी भर आया। नहीं बाबा, नहीं, यह नहीं हो सकता। अगर तुमने इसी तरह करना है, तो चले जाओ। मैं बाहड़ से मुजड़मों को पकड़ लाऊँगा ; झंडूशाह जरीमाना कर देंगे। क्यों झंडूशाह ?

झंडूशाह—

हमारा नया-नया काम है, आमदनी कुछ है नहीं। देखते ही हो, कुल चार आने आये हैं। अब इसमें से तुम्हें क्या मिल सकता है ? फड़ंगी सड़-काड़ से तलब लेना, फड़ंगी सड़काड़ से।

गोपालदास—

हुज़ूर, मैं इसमें से हिस्सा नहीं माँगता।

झंडूशाह—

(संतुष्ट होकर) हिस्सा नहीं, माँगते, बहुत अच्छा बात है। तो फिर क्या कहते हो, जल्दी कहो।

गोपालदास—

यह जुर्माना सरकारी ख़ज़ाने में दाख़िल किया जायगा। इस पर आपका हक़ नहीं।

गंडूशाह—

हमारा हक़ नहीं, तो क्या तुम्हारा हक़ है? झंडूशाह, तुमने सुना, इस पर हमारा हक़ नहीं। वाह फ़डंगी साहब के मुनीम!

झंडूशाह

इसको एक-एक पैसा दे दो, तो हमारा हक़ हो जायगा। बड़ा लुच्चा आदमी है। हम इसे नौकड़ नहीं रखते। (गोपालदास से) चले जाओ।

गोपालदास—

जनाब . हुज़ूर...मैं...

झंडूशाह—

हम नहीं रखते। चलो, फैसला हुआ। कोई जबरजस्ती है। जी चाहा, रख लिया। जी चाहा, जवाब दे दिया। हम डिप्टी हैं। जानते हो, हम डिप्टी हैं। हम जो चाहें कर सकते हैं।

गंडूशाह—

(गले का साफा ठीक करके) जाओ, चले जाओ। हम तुम्हें नौकड़ नहीं रखते।

(गोपालदास चुप हो जाता है, चपरासी अंदर आता है।)

चपरासी—

जनाब! लाला रामदास भंडारी आपसे मिलने आये हैं। आने दूँ या न आने दूँ?

गंडूशाह—

झंडूशाह—

हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

आ जाय, तुम्हारी क्या सलाह है। फड़ंगी साहब खफा न हो जाय, यह सोच लो। फिर मुझे न कहना।

झंडूशाह—

(गोपालदास से) क्यों मुनीमजी ! कुछ हड़ज है ?

गोपालदास—

नहीं हुजूर, बिलकुल नहीं। बड़ी खुशी से बुला लीजिए। कोई हर्ज नहीं। (चपरासी से) जाओ, बुला लाओ।

गंडूशाह—

अब कोई और मुजड़म तो नहीं, जिसे जरीमाना करना हो ?

गोपालदास—

नहीं, हुजूर, अब कोई नहीं।

(गोपालदास मुक़दमे का फ़ैसला लिखने लग जाता है और चपरासी के साथ रामदास भंडारी अंदर आता है।)

रामदास—

ड़ाम-ड़ाम डिप्टी साहब ! ड़ाम-ड़ाम !

गंडूशाह—

ड़ाम-ड़ाम महाड़ाज ! ड़ाम-ड़ाम !

झंडूशाह—

ड़ाम-ड़ाम शाहजी ! आइए, बैठिए !

(रामदास कुछ दूर पर खड़ा हो जाता है।)

गंडूशाह—

इधर बैठिए, अपना घड़ है, खड़े क्यों हो ?

झंडूशाह—

बैठ जाइए, बैठ जाइए।

(रामदास बड़ी कठिनाई से कुरसी पर अकड़कर बैठ जाता है।)

झंडूशाह—

कैसे आये ? यहाँ हुक्का-पानी तो है नहीं। क्षमा कीजिए।

रामदास—

क्या फिकड़ है। (कुछ देर के बाद) मैं सिकायत लेकर आया हूँ।

झंडूशाह—

(चौंककर) सिकायत ! किसकी सिकायत ? अब तो हम डिप्टी हैं, कैद कर सकते हैं, जरीमाना कर सकते हैं। (मूछों पर हाथ फेरता है।)

रामदास—

आपने गजब कर दिया।

गंडूशाह—

क्यों-क्यों, क्या कर दिया ? (घबराकर) महाड़ाज ! हमने तो कुछ नहीं किया, मामला क्या है ? जल्दी कहो।

रामदास—

अपने लड़के ही को जरीमाना कर दिया !

गंडूशाह—

तो वह आपका लड़का था ?

झंडूशाह—

जिसे अभी-अभी चार आने जरीमाना हुआ है ?

रामदास—

जी हाँ, अपना लड़का है वह तो।

गंडूशाह—

झंडूशाह !

झंडूशाह—

(उदास होकर) हाँ भई गंडूशाह !

गंडूशाह—

(धोती से दुअन्नी निकालकर) दुअन्नी वापस कर दो। आज का दिन बहुत बुड़ा है। घड़ से निकलते ही ब्राह्मण मिला था *।

* पंजाब में किसी को काम पर जाते समय यदि पहले ब्राह्मण मिल जाय तो इसे बुरा समझा जाता है। —लेखक

झंडूशाह—

(दुअन्नी वापस देकर) मगर गंडूशाह ! इस तड़े तो गुजाड़ा न ह सकेगा।

गंडूशाह—

बिलकुल नहीं हो सकेगा।

(रामदास चला जाता है। गोपालदास काग़ज़ पेश करता है।)

गंडूशाह—

क्या है, मसाल खाँ जी!

गोपालदास—

जनाब दस्तख़त कर दें। यह मुक़दमे का फैसला है।

गंडूशाह—

मगर पैसे तो वापस कर दिये?

गोपालदास—

पैसे वापस कर दिये!

गंडूशाह—

जिसने जरीमाना दिया था, वह तो अपनी बिड़ादड़ी के आद का लड़का निकल आया।

झंडूशाह—

अभी-अभी जो आया था, वही था। दोनों से दुअन्नी-दुअन्नी वा ले गया।

गोपालदास—

हुज़ूर, क़ानून में तो यह नहीं होता।

झंडूशाह—

तो कानून में क्या होता है?

गोपालदास—

वाक़िफ़कार आदमियों को भी सज़ा हो जाती है।

गंडूशाह

तो हम अपने लड़के-बालों को भी सज़ा देंगे? न बाबा, हमस यह न

सकेगा। हम डिप्टी नहीं बनते। हमको कचहड़ी करना आता ही कब है? मुफत का जंजाल।

गोपालदास—

नहीं हुजूर, साहब बहादुर ने फ़रमाया है कि एक वकील को हिदायत कर दी गई है। वह आपको क़ानून के तमाम पहलू समझा देंगे। आप फ़िक्र न करें। सब कुछ ठीक हो जायगा।

गंडूशाह—

(कुछ उदास होकर) अच्छा, मगर तुमको हिस्सा नहीं मिलेगा

झंडूशाह—

हाँ, फिर न कहना, कहा नहीं, इसी लिए फिर कह दिया है। अपनी तलब सड़काड़ से लेना सड़काड़ से।

(गोपालदास हँसता है।)

गोपालदास—

बहुत अच्छा हुज़ूर, मैं नहीं माँगूँगा। दस्तख़त तो कर दीजिए।

गंडूशाह -

झंडूशाह! तुम कर दो।

झंडूशाह—

नहीं गंडूशाह! तुम्हीं कर दो।

गंडूशाह—

क्या हड़ज है, कर दो।

झंडूशाह!

कोई फिकड़ न करो, तुम ही कर दो।

गंडूशाह—

(गोपालदास से) तुम्हीं कर दो। क्यों झंडूशाह?

झंडूशाह—

यह सबसे अच्छी बात है। (गोपालदास से) कर दो।

गोपालदास—

नहीं हुज़ूर, आप हाकिम हैं; इस पर आप ही के दस्तख़त चाहिए।

झंडूशाह—

लाओ भई ! मैं ही कर देता हूँ। (काग़ज़ देखकर) हैं ! यह फाड़सी है।

गोपालदास—

नहीं हुज़ूर ! उर्दू है।

गंडूशाह—

उड़दू'फाड़सी में क्या फड़क है ? एक ही बात है। तुम इतना भी नहीं जानते ?

झंडूशाह—

अब से लुंडे लिखा करो, हम उड़दू-फाड़सी नहीं जानते। सुना।

(अँगूठा लगा देता है।)

गोपालदास

(गंडूशाह से) आप भी कर दीजिए।

गंडूशाह—

एक चवन्नी तो जरीमाना की है, अब सबके अँगूठे लगवा लो। क्या झंडूशाह का अँगूठा काफी नहीं ?

(गंडूशाह भी अँगूठा लगा देता है।)

झंडूशाह —

तो अब छुट्टी है ना मशाल खाँ जी महाड़ाज ?

गोपालदास—

हाँ जनाब ! अब कोई मुक़दमा नहीं।

(झंडूशाह और गंडूशाह झूमते-झामते जाते हैं) कचहरी के सब आदमी इधर-उधर से झाँक-झाककर देखते और हँसते हैं।)